1990-91 में प्रवेश
विद्यार्थियों का वर्गवार विभाजन
(छात्र/छात्राएँ)

डीडीई

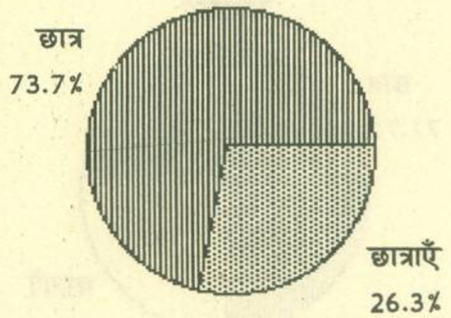

कुल विद्यार्थी	825
छात्र	608
छात्राएँ	217

बीएलएस

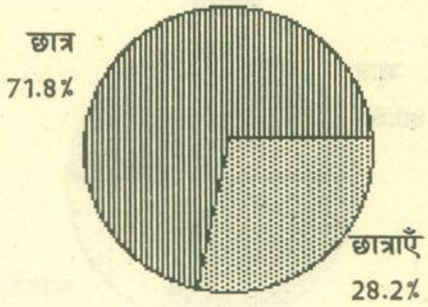

कुल विद्यार्थी	1872
छात्र	1345
छात्राएँ	527

डीसीओ

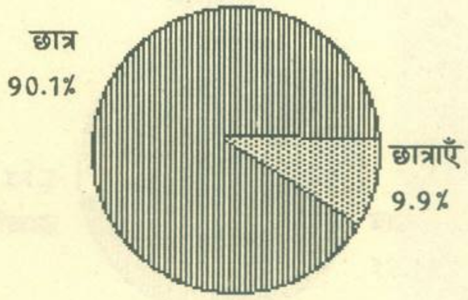

कुल विद्यार्थी	484
छात्र	436
छात्राएँ	48

सीएफएन

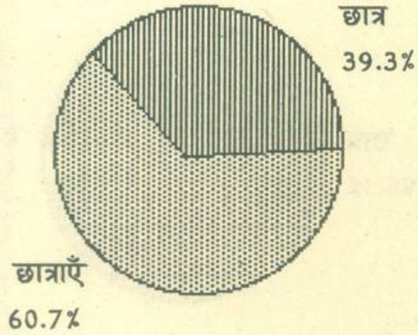

कुल विद्यार्थी	2919
छात्र	1147
छात्राएँ	1772

चित्र 13 ख

1990–91 में प्रवेश
विद्यार्थियों का वर्गवार विभाजन
(अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/सामान्य)

बीपीपी

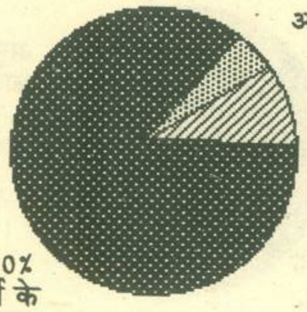

कुल छात्र	11237
अनु. जाति के छात्र	1189
अनु. जन. के छात्र	517
सामान्य वर्ग के छात्र	9551

बीडीपी

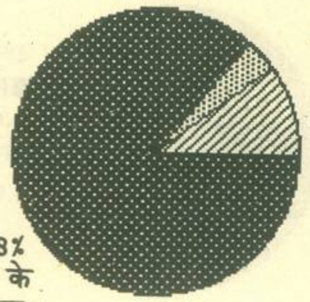

कुल छात्र	13789
अनु. जाति के छात्र	1048
अनु. जन. के छात्र	496
सामान्य वर्ग के छात्र	12245

डीआईएम

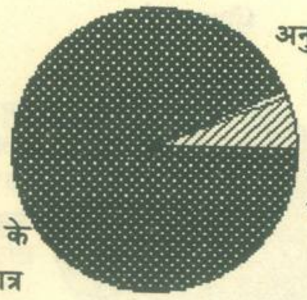

कुल छात्र	7718
अनु. जाति के छात्र	370
अनु. जन. के छात्र	62
सामान्य वर्ग के छात्र	7286

एसडीएम

कुल छात्र	4127
अनु. जाति के छात्र	148
अनु. जन. के छात्र	21
सामान्य वर्ग के छात्र	3958

चित्र 14 क

1990–91 में प्रवेश
विद्यार्थियों का वर्गवार विभाजन
(अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/सामान्य)

डीडीई

कुल छात्र	825
अनु. जाति के छात्र	16
अनु. जन. के छात्र	5
सामान्य वर्ग के छात्र	804

बीएलएस

कुल छात्र	1872
अनु. जाति के छात्र	49
अनु. जन. के छात्र	13
सामान्य वर्ग के छात्र	1810

डीसीओ

कुल छात्र	484
अनु. जाति के छात्र	19
अनु. जन. के छात्र	4
सामान्य वर्ग के छात्र	461

सीएफएन

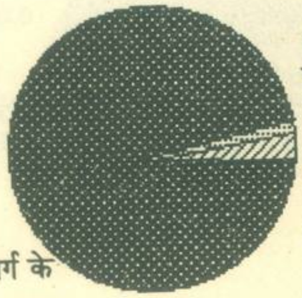

कुल छात्र	2919
अनु. जाति के छात्र	98
अनु. जन. के छात्र	38
सामान्य वर्ग के छात्र	2783

चित्र 14 ख

1990–91 में प्रवेश
विद्यार्थियों का वर्गवार विभाजन
(ग्रामीण/शहरी)

बीपीपी

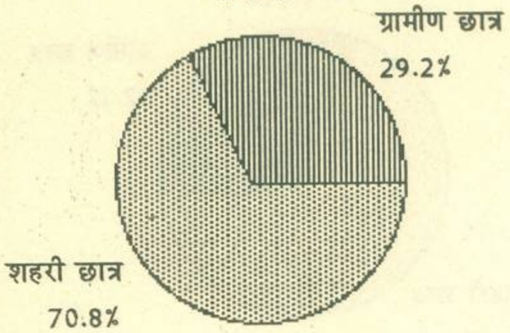

कुल छात्र	11237
ग्रामीण छात्र	3281
शहरी छात्र	7956

बीडीपी

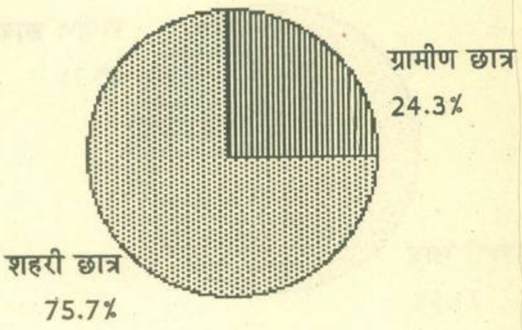

कुल छात्र	13789
ग्रामीण छात्र	3351
शहरी छात्र	10438

डीआईएम

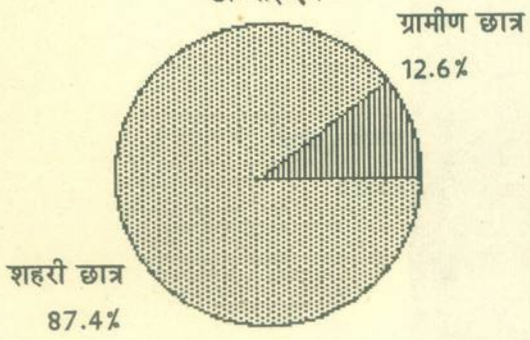

कुल छात्र	7718
ग्रामीण छात्र	972
शहरी छात्र	6746

एसडीएम

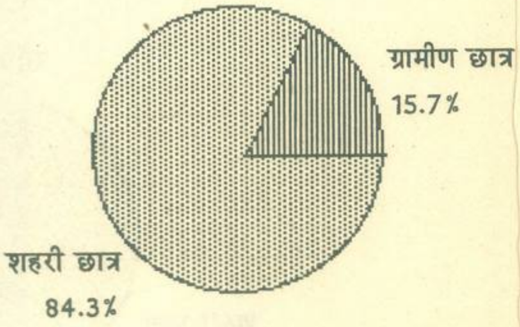

कुल छात्र	4127
ग्रामीण छात्र	648
शहरी छात्र	3479

चित्र 15 क

1990–91 में प्रवेश
विद्यार्थियों का वर्गवार विभाजन
(ग्रामीण/शहरी)

डीडीई

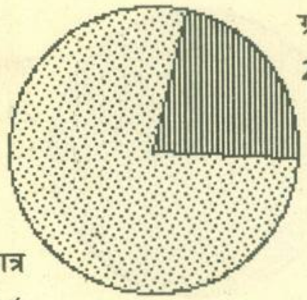

कुल छात्र	825
ग्रामीण छात्र	232
शहरी छात्र	593

बीएलएस

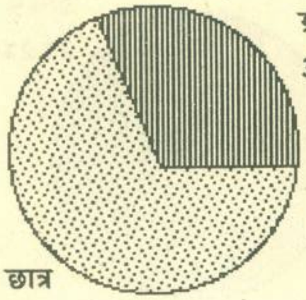

कुल छात्र	1872
ग्रामीण छात्र	600
शहरी छात्र	1272

सीएफएन

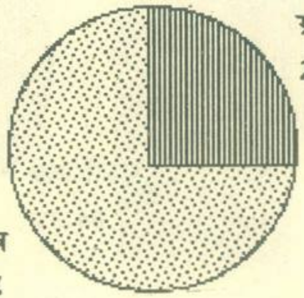

कुल छात्र	2919
ग्रामीण छात्र	735
शहरी छात्र	2184

चित्र 15 ख

स्नातक उपाधि के प्रारंभिक कार्यक्रम, प्रबंध में डिप्लोमा और कार्यालय प्रबंध में कंप्यूटर में डिप्लोमा कार्यक्रमों में प्रवेश-परीक्षा द्वारा प्रवेश दिया जाता है । जो आवेदन प्रवेश की आवश्यक शर्तों को पूरा करते हैं, उन्हें अन्य कार्यक्रमों में प्रवेश दिया जाता है । 1990-91 में विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में 45,716 छात्रों को दाखिला दिया गया । इसके अलावा, स्नातक उपाधि कार्यक्रम के द्वितीय वर्ष में 4,579 छात्रों को दाखिला दिया गया तथा 2051 छात्रों को तृतीय वर्ष में प्रवेश दिया गया । वर्ष 1990-91 में कुल मिलाकर 52376 छात्र विभिन्न कार्यक्रमों में प्रविष्ट हुए । इनमें लगभग सभी राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के छात्र थे, हालांकि हर राज्य के छात्रों की संख्या में काफ़ी अंतर था ।

विश्वविद्यालय में नामांकन की कुछ मुख्य बातें नीचे दी गई हैं :

- विश्वविद्यालय में प्रविष्ट छात्रों की कुल संख्या में से 32% ने प्रबंध कार्यक्रमों में प्रवेश लिया (ये कार्यक्रम सेवारत प्रबंधकों को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं) ।
- पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातक उपाधि तथा कंप्यूटर अनुप्रयोग में डिप्लोमा कार्यक्रम भी सेवारत कार्मिकों के लिए हैं । ये कुल नामांकन के 3% हैं ।
- 31.3.1991 को स्नातक उपाधि के प्रारंभिक पाठ्यक्रम में कुल नामांकन के 10% छात्रों ने प्रवेश लिया ।
- स्नातक उपाधि कार्यक्रम में (द्वितीय और तृतीय वर्ष के पंजीकरण सहित) नामांकन लेने वाले छात्रों का प्रतिशत कुल प्रवेश का 43% है ।
- अन्य कार्यक्रमों में कुल नामांकन का 12% था (इसमें दूर शिक्षा और सृजनात्मक लेखन का डिप्लोमा तथा भोजन और पोषण में प्रमाण-पत्र कार्यक्रम शामिल है) ।

मूल्यांकन प्रभाग

वर्ष 1990-91 में मूल्यांकन प्रभाग ने स्नातक उपाधि के प्रारंभिक कार्यक्रम, प्रबंध में डिप्लोमा तथा कार्यालय प्रबंध में कंप्यूटर में डिप्लोमा कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए तीन प्रवेश परीक्षाएँ आयोजित कीं ।

वर्ष में तीन सत्रांत परीक्षाएँ आयोजित की गईं । इन परीक्षाओं में 20,000 छात्र/छात्राएँ बैठे । स्नातक उपाधि कार्यक्रम की सत्रांत परीक्षा देश-भर के 124 केंद्रों में संचालित की गई । इस कार्यक्रम में छात्रों की सबसे अधिक संख्या होती है । इस परीक्षा की उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन 300 परीक्षकों द्वारा किया गया ।

दिसंबर, 1990 तक बहुत बड़ी संख्या में छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूरा किया । छात्रों के पहले दल ने 1990-91 में पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातक उपाधि कार्यक्रम संपन्न किया । दिसंबर, 1990 की परीक्षा में कुल 1032 छात्र बैठे । इनमें से स्नातक उपाधि के 105 छात्र सफल घोषित किए गए । दिसंबर, 1990 तक अन्य कार्यक्रमों को पास करने वाले छात्रों की संख्या नीचे दी गई है :

- प्रबंध में डिप्लोमा — 4643
- प्रबंध में उच्च डिप्लोमा — 636
- प्रबंध में विशेषीकृत डिप्लोमा — 1151

- दूर शिक्षा में डिप्लोमा — 559
- अंग्रेज़ी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा — 97
- भोजन और पोषण में प्रमाण-पत्र — 1260
- ग्राम विकास में प्रमाण-पत्र — 130

छात्र-निष्पादन
(दिसंबर, 1990 तक)

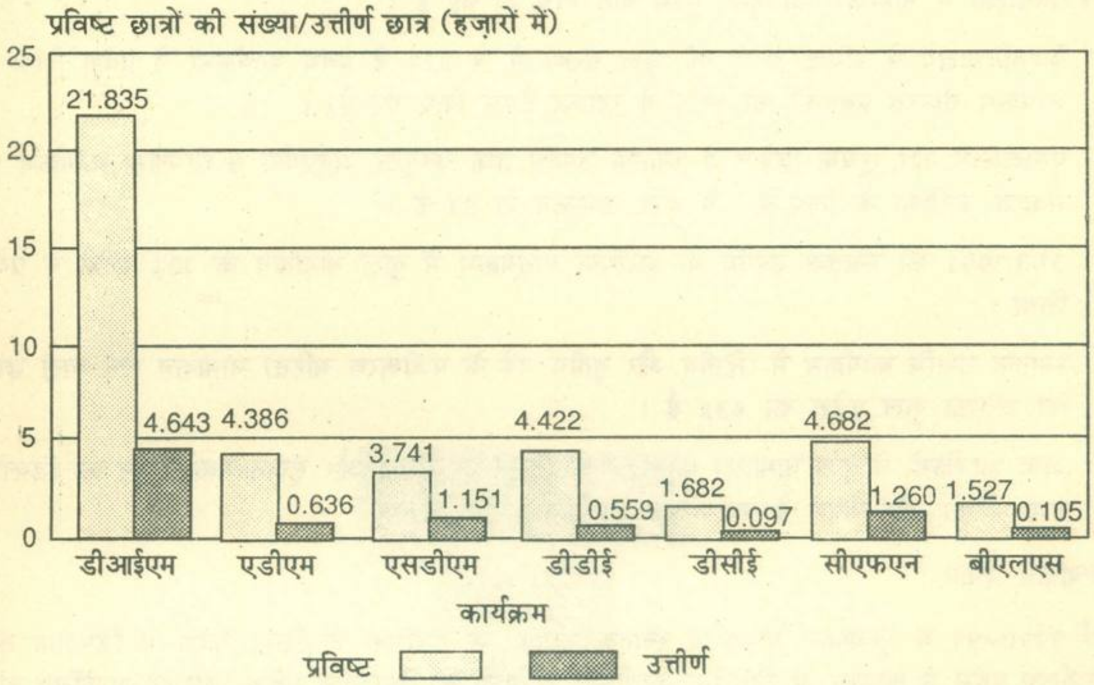

चित्र 16

विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने वाले प्रत्येक छात्र को सत्रीय कार्य की निर्धारित संख्या पूरी करनी होती है। इन सत्रीय कार्यों की संख्या विभिन्न कार्यक्रमों के लिए 12 से 24 के बीच होती है । विश्वविद्यालय साल-भर में कुल मिलाकर तीन लाख सत्रीय कार्य प्राप्त करता है । इनमें से लगभग दो लाख सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन काउंसलरों द्वारा किया जाता है और शेष लगभग एक लाख का मूल्यांकन कंप्यूटर प्रभाग द्वारा होता है । इन सत्रीय कार्यों की श्रेणियों (ग्रेडों) को संबद्ध छात्र के रिकॉर्ड में चढ़ा दिया जाता है और इनके ग्रेड कार्ड छात्रों को भेज दिए जाते हैं ।

मूल्यांकन प्रभाग शैक्षिक परिषद् के अनुमोदन से सत्रीय कार्य के मूल्यांकन और परीक्षाओं के संचालन के लिए व्यापक मार्गदर्शक सिद्धांतों का निर्माण करता है ।

कंप्यूटर प्रभाग

विश्वविद्यालय के प्रशासन, विशेषतः छात्र सहायता सेवाओं के क्षेत्र में, प्रबंध सूचना सेवाएँ प्रदान करने में कंप्यूटर प्रभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । यह प्रभाग छात्रों के समस्त अभिलेखों की व्यवस्था के

लिए जिम्मेदार है । यह छात्रों के आँकड़ों का विश्लेषण करता है तथा जिस पाठ्यक्रम के लिए वह पंजीकृत है, उसका पूरा रिकॉर्ड, उसके द्वारा अदा किया गया शुल्क, दी गई परीक्षाओं तथा परीक्षा परिणाम आदि का पूरा-पूरा हिसाब रखता है । इसके अलावा, प्रभाग ने छात्र सूचना प्रणाली के लिए डाटा बेस भी विकसित किया है ।

प्रभाग द्वारा वर्ष के आरंभ में लगभग 1.12 लाख छात्रों के रिकॉर्ड का रखरखाव किया गया । 1990–91 के दौरान लगभग 45,000 छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश लिया । उनके आँकड़ों को संसाधित करके उनके रिकॉर्ड में शामिल कर लिया गया ।

वर्ष 1990–91 में लगभग 32,000 छात्र प्रवेश परीक्षा में बैठे । उनकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन माइक्रो वैक्स/ओ.एम.आर. पद्धति द्वारा किया गया । इसके अलावा वर्ष के दौरान सत्रांत परीक्षा में बैठने वाले लगभग 20,000 छात्रों से संबंधित आँकड़ों को संसाधित किया गया और ग्रेड कार्ड तैयार किए गए। प्रभाग ने कंप्यूटर द्वारा अंकित लगभग एक लाख सत्रीय कार्यों को संसाधित किया और अध्यापकों द्वारा जांचे गए सत्रीय कार्यों के आधार पर ग्रेड कार्ड तैयार किए ।

कंप्यूटर प्रभाग आँकड़ों के संसाधन और सूचना सेवाएँ प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है । प्रवेश के विकेंद्रीकरण के साथ कंप्यूटर प्रभाग ने क्षेत्रीय केंद्रों में आवेदन-पत्रों के संसाधन के लिए और आँकड़ों को मुख्यालय को प्रेषित करने के लिए सॉफ्टवेयर पैकेज तैयार किया है । क्षेत्रीय केंद्रों में कार्यरत कर्मचारियों को इस पैकेज के अनुप्रयोग के लिए प्रशिक्षित किया गया है । कंप्यूटर के उपयोग के लिए विश्वविद्यालय स्टाफ के 150 सदस्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। क्षेत्रीय केंद्रों और प्रवेश प्रभाग से छात्रों के दैनंदिन आँकड़ों को कंप्यूटर प्रभाग को प्रेषित करने के काम पर नज़र रखने के लिए सॉफ्टवेयर पैकेज तैयार किए गए हैं । इसी प्रकार की पद्धति सत्रीय कार्यों की प्राप्ति पर नज़र रखने के लिए अपनाई गई है ।

इस वर्ष के दौरान वेतनपत्रक-पद्धति और वित्तीय लेखाकरण के लिए पद्धतिविश्लेषण तथा डिज़ाइन-कार्य को हाथ में लिया गया । परियोजना का प्रायोगिक कार्य प्रगति पर है । विभिन्न प्रभागों के कार्य के लिए अपेक्षित सूचनाओं की समीक्षा की गई और उनके उपयोग के लिए संभावित रिपोर्ट के प्रारूप को मानकीकृत तथा सुव्यवस्थित किया गया । अपनी रिपोर्ट और अध्ययन तैयार करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय तथा अन्य सूचनाएँ निरंतर तैयार कर संबद्ध विभागों को उपलब्ध कराई जाती हैं ।

सभी प्रकार के विभागीय कार्य के लिए सॉफ्टवेयर पैकेज कंप्यूटर प्रभाग द्वारा ही तैयार किए जाते हैं ।

मुद्रण तथा प्रकाशन प्रभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की शिक्षण प्रणाली में मुद्रित सामग्री, अध्ययन पैकेजों का मूल आधार है । विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जाने वाले सभी पाठ्यक्रमों की अध्ययन सामग्री मुद्रित रूप में प्रस्तुत की जाती है । विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की संख्या में निरंतर वृद्धि के कारण मुद्रित सामग्री की मात्रा में भी अत्यधिक वृद्धि हुई है ।

वर्ष 1990–91 के दौरान नई पाठ्यक्रम सामग्री की 9.3 लाख प्रतियाँ तैयार की गईं और 16.65 लाख प्रतियों का पुनर्मुद्रण किया गया । वर्ष के अंत में पाठ्यक्रम सामग्री की 2.7 लाख प्रतियाँ मुद्रित की गईं। 31.3.1991 तक विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए 35.50 लाख प्रतियाँ मुद्रित की गईं ।

प्रकाशित मुद्रित सामग्री के खंडों की संख्या
(प्रथम संस्करण और पुनर्मुद्रण)

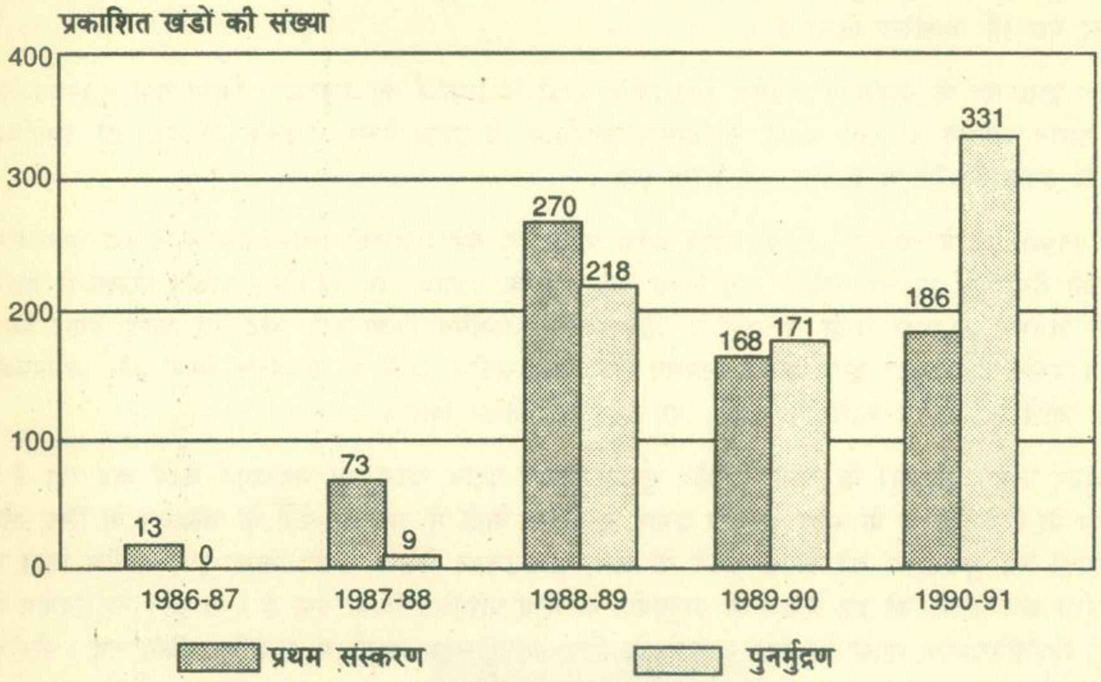

चित्र 17

मुद्रित पाठ्यक्रम सामग्री के खंडों की प्रतियों की संख्या
(प्रथम संस्करण और पुनर्मुद्रण)

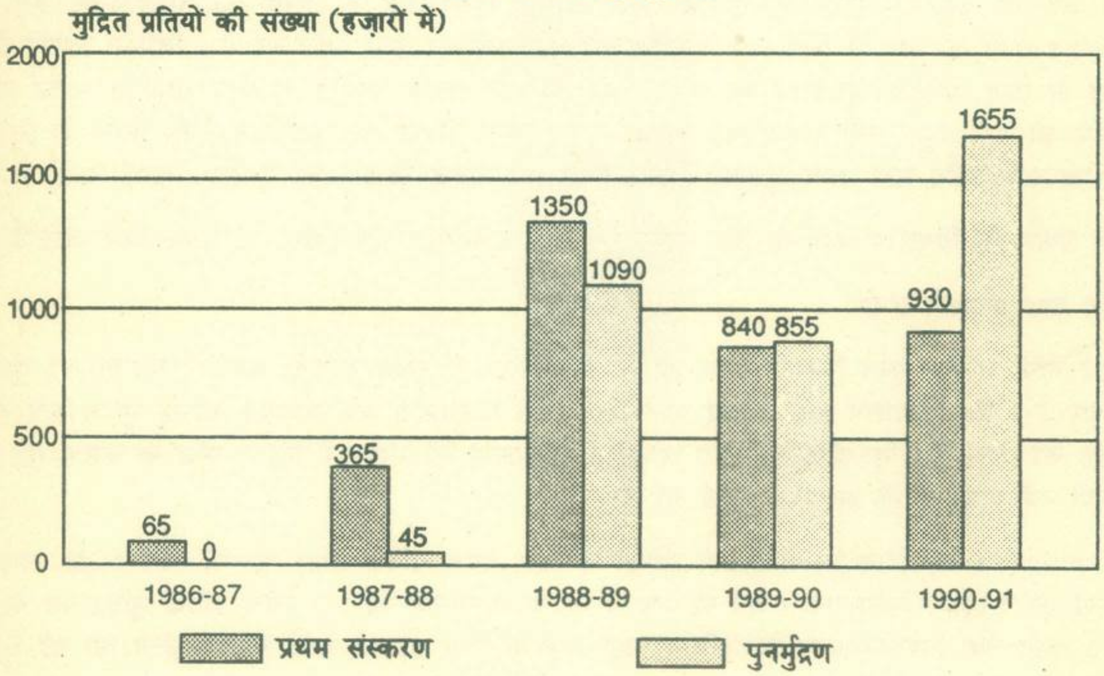

चित्र 18

पाठ्यक्रम सामग्री के अलावा, कार्यक्रम-दर्शिकाएँ, छात्र सत्रीय कार्य और सामान्य सूचना साहित्य आदि कई अन्य प्रकार के प्रकाशन भी प्रभाग द्वारा मुद्रित किए जाते हैं ।

सभी मुद्रण कार्य बाहरी एजेंसियों से कराया जाता है । इनमें 40 ऑफसेट मुद्रक, 40 फोटोकॉपी सेटर, 15 लेज़र प्रिंटर तथा 7 डिज़ाइनर हैं ।

सामग्री वितरण प्रभाग

इस प्रभाग का मुख्य कार्य मुद्रित सामग्री तथा ऑडियो/वीडियो कैसेटों का भंडारण तथा वितरण है । विश्वविद्यालय सभी छात्रों को मुख्यालय से ही पाठ्य-सामग्री भेजता है ताकि शिक्षण सामग्री के पैकेज भेजने में अनावश्यक देरी न हो । स्पष्ट है कि मुद्रकों से मुद्रित सामग्री एकत्रित करने, उनको छांट कर अलग-अलग रखने, प्रत्येक छात्र द्वारा लिए गए पाठ्यक्रम के अनुसार उनका पैकेट बनाने तथा प्रवेश के तुरंत बाद संबद्ध पाठ्यक्रम सामग्री भेजने जैसे विशाल कार्य को करता है । 1990-91 के पूरे वर्ष के दौरान लगभग 2.37 लाख छात्रों को पाठ्य-सामग्री भेजी गई । ये सामग्री सभी अध्ययन तथा क्षेत्रीय केंद्रों को भी भेजी गई है ।

वर्ष 1990-91 में लगभग 1000 टन छपाई का कागज़ खरीदा गया । इस प्रभाग में वर्ष भर में लगभग 25 लाख मुद्रित सामग्री की प्रतियाँ प्राप्त की गई । विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के लिए तैयार किए गए लगभग 7,900 ऑडियो/वीडियो कैसेट क्षेत्रीय और अध्ययन केंद्रों को प्रेषित किए गए ।

पुस्तकों के भंडारण के लिए मल्टी फ्लेक्स पद्धति स्थापित कर दी गई है । इससे भंडार के स्थान का अधिकाधिक उपयोग हो सकेगा । भंडारण के विभिन्न कार्यों के यंत्रीकरण को शीघ्र हाथ में लिया जाएगा । उपस्कर मुहैया करने और उन्हें लगाने के लिए एक परियोजना रिपोर्ट तैयार की जा चुकी है ।

IX. स्तरों का समन्वय और रख-रखाव

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 5(2) के अनुसार यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय देश-भर में मुक्त विश्वविद्यालय और दूर शिक्षा पद्धति के प्रोत्साहन के लिए सभी प्रकार के आवश्यक कार्य करे । दूर शिक्षा पद्धति के मानदंड निश्चित करने तथा उन्हें बनाए रखने के लिए भी विश्वविद्यालय उत्तरदायी है । 1990-91 में भी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम में इन प्रावधानों पर अमल करने के प्रयास जारी रहे । इन प्रावधानों को लागू करने के संबंध में इस वर्ष में निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण बातें हुई :

- विश्वविद्यालय के प्रबंध बोर्ड ने 1987 से देश मे दूर शिक्षा पद्धति के प्रोत्साहन, समन्वयन और दूर शिक्षा के स्तर को बनाए रखने के लिए एवं इस उद्देश्य के लिए समुचित व्यवस्था करने के लिए उठाए गए कदमों की व्यापक समीक्षा की । इन प्रयासों की समीक्षा करते समय प्रबंध बोर्ड ने विश्वविद्यालय के अधिनियम के अधीन दूर शिक्षा परिषद् स्थापित करने पर सिद्धांत रूप में सहमति व्यक्त की ।
- अक्तूबर, 1990 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दूर शिक्षा पद्धति के स्तर को बनाए रखने में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की भूमिका पर विचार किया । इस मामले पर और आगे विचार के लिए आयोग ने एक उच्च अधिकार प्राप्त समिति गठित की । शिक्षा सचिव, भारत सरकार; उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति इस समिति के सदस्य थे ।

समिति ने इस विषय में निम्नलिखित सिफारिशें कीं :

- मुक्त विश्वविद्यालय और दूर शिक्षा पद्धति के उन्नयन, समन्वय और स्तरों के निर्धारण के बारे में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को जो कार्य सौंपे गए हैं, उनका 1991–92 से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय पूरी तरह निर्वाह करेगा । इस प्रयोजन के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की यह पूरी जिम्मेदारी होगी कि वह जिन पत्राचार पाठ्यक्रमों तथा दूर शिक्षा के संस्थानों और निदेशालयों में दूर शिक्षा कार्यक्रमों की व्यवस्था है, उन्हें अनुदान का विनिधान और वितरण करे ।
- इन कार्यों को पूरा करने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एक सांविधिक प्राधिकरण के रूप में दूर शिक्षा परिषद् की स्थापना करे ।
- दूर शिक्षा परिषद् को दी गई शक्तियाँ और प्रकार्य तीन विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित होंगे । ये हैं – (i) संवर्धनात्मक कार्यकलाप, (ii) स्तरों का निर्धारण और अनुरक्षण तथा (iii) समन्वय ।
- दूर शिक्षा परिषद् का गठन मोटे तौर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तुल्य होगा ।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने फरवरी, 1991 में इन सिफारिशों की पुष्टि की ।
- केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड भी मुक्त विश्वविद्यालय पद्धति के संवर्धन में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की भूमिका के बारे में विचार करता रहा है । जून, 1987 में आयोजित बैठक में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने देश में स्थापित सभी मुक्त विश्वविद्यालयों की एक समन्वय परिषद् स्थापित करने की सिफ़ारिश की थी । मार्च, 1991 में आयोजित बैठक में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने निम्नलिखित सिफारिशें कीं :
- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दूर शिक्षा के बढ़ते हुए महत्व को देखते हुए प्रत्येक राज्य को अपने यहाँ एक मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित करना चाहिए ।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई पाठ्यक्रम सामग्री का उपयोग राज्य उनका अनुवाद कराकर कर सकते हैं ।
- परंपरागत विश्वविद्यालयों में चलाए जा रहे पत्राचार कार्यक्रमों को दूर शिक्षा कार्यक्रमों के अनुरूप ढालने का प्रयास करना चाहिए ।
- परंपरागत और मुक्त विश्वविद्यालय पद्धति के बीच आदान-प्रदान होना चाहिए ।
- दूर शिक्षा के संबंध में एक केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड समिति बनाई जानी चाहिए ।

इस प्रकार इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को शीर्षस्थ निकाय का दर्जा प्राप्त होने की संभावना लगभग पूरी हो गई । इन निर्णयों को अमल में लाने के लिए विश्वविद्यालय ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम के अधीन सांविधानिक प्राधिकार प्राप्त दूर शिक्षा परिषद् स्थापित करने के लिए व्यापक परिनियम बनाए । मार्च, 1990–91 में परिनियम का मसौदा विश्वविद्यालय प्रबंध बोर्ड के समक्ष अनमोदन के लिए प्रस्तुत किया गया था ।

इस दौरान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालय परस्पर पूर्ण समन्वित रूप से कार्य करते रहे । विश्वविद्यालय और राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालयों की बैठकों में प्रतिनिधियों के बीच प्रवेश प्रक्रिया, पाठ्यक्रम अभिकल्प तथा संरचना, छात्र मूल्यांकन, पाठ्यक्रम की

समानता आदि जैसे आपसी हित के मामलों में बराबर चर्चा की गई थी । इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई पाठ्यक्रम सामग्री का उपयोग आंध्र प्रदेश, राजस्थान तथा महाराष्ट्र राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालयों में भी किया जाता है ।

प्रबंध बोर्ड द्वारा गठित विज़िटिंग समिति की सिफारिशों के आधार पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने 1990–91 के दौरान आंध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय को 23 लाख रुपए की और कोटा मुक्त विश्वविद्यालय को 22 लाख रुपए की वित्तीय सहायता की स्वीकृति प्रदान की । दो विश्वविद्यालयों द्वारा इस सहायता का उपयोग अपने छात्रों के रिकॉर्डों के कंप्यूटरीकरण तथा स्टाफ विकास कार्यक्रम आयोजित करने के लिए किया जाएगा ।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अपने विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों के लिए अनेक प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करता रहा है । राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालयों तथा परंपरागत विश्वविद्यालयों के दूर शिक्षा निदेशालयों में कार्यरत कर्मचारी भी ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेते रहे हैं ।

X. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

1. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय – ओ.डी.ए. (इंगलैंड) परियोजना

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यायल और यू.के. मुक्त विश्वविद्यालय के बीच 1 अप्रैल, 1988 में शुरू हुए सहयोग परियोजना के तीसरे चरण की समाप्ति 31 मार्च, 1991 में होनी थी लेकिन इस परियोजना के कई अंशों को मार्च, 1991 के अंत तक पूर्णतया पूरा किया जा चुका था । इसलिए दोनों पक्ष इस परियोजना को मार्च, 1993 तक बढ़ाने पर सहमत हो गए । परियोजना के इस चरण के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को 33 लाख रुपये की सहायता प्राप्त हुई जिसका उपयोग इलैक्ट्रॉनिक मीडिया उपस्कर, मेन फ्रेम कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर, मुद्रण और पैकेज बनाने के उपस्कर, पुस्तकें, पद्धति विकास के लिए परामर्श सेवा तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए किया जाएगा ।

वर्ष 1990–91 में इस परियोजना के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को निम्नलिखित सहायता प्राप्त हुई :

- यू.के. के नौ परामर्शदाताओं ने विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम विकास, संचार प्रौद्योगिकी, छात्र सहायता सेवाओं, योजना निर्माण आदि महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहायता की ।
- विश्वविद्यालय के स्टाफ के सदस्यों ने यू.के. मुक्त विश्वविद्यालय और इंगलैंड की अन्य संस्थाओं में जाकर प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

इस परियोजना के अंतर्गत सहायता पैकेजों के जिन मुख्य घटकों को अभी मुहैया कराया जाना है, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

- ऑडियो, वीडियो कार्यक्रमों के उत्पादन के लिए संचार प्रौद्योगिकी उपस्कर ।
- मुद्रण सामग्री को कंपोज़ करने तथा पेज सेटिंग के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपस्कर ।
- पुस्तकालय के लिए माइक्रो फिशे रीडर और पुस्तकें ।